हिन्दी दैनिक
देश की उपासना
जौनपुर, लखनऊ व भदोही से प्रकाशित
देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए
dkunews24

भूकंप से मंगलवार को दो-बार हिली लखनऊ राजधानी: जाने-माने पर्यावरणविद ने क्या बताया इसका कारण?

pratyanshu123 November 11, 2022 No Comments

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ: राजधानी में मंगलवार को शाम 8:52 मिनट तथा प्रातः 1:57 मिनट पर भूकम्प के झटको ने राजधानी निवासियो को हिलाकर रख दिया और लोग विवस हो गये इसके सोचने के लिये कि इसका क्या कारण है । क्योकि चंद्रग्रहण जो आमावस्या को साय 5:30 से 6:30 पर समाप्त हुआ था, उसी के क्रम में यह भी घटना का होना किसी अनिष्ट का सूचक माना जा रहा है । नेपाल में तो 8- लोगो की मृत्यु तथा मकानो के गिरने से तवाही उत्पन्न हो गई है। डॉ भरत राज सिंह, जो एक वरिष्ठ पर्यावरणविद तथा स्कूल आफ मैंनेजमेंन्ट साइंसेज, लखनऊ के महा-निदेशक तकनीकी हैं ने बताया कि हिमालय की सृन्खला के नजदीक है और हिमालय की पहाडियो में जलवायुपरिवर्तन के कारण अनेको घटनाये हो रही हैं उसी कडी में भूकम्प भी एक बडी घटना निरंतर होना स्वाभाविक है । इसके मुख्य कारण उन्होने अपनी गोलबल-वार्मिंग-2012 तथा क्लाइमेट चेंज- 2013 की पुस्तको में, पूर्व में ही कर चुके हैं कि हिमालय ग्लैसियर उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव के ग्लैसियर के बाद विश्व का तीसरा बडा क्षेत्र है । यह भी विगत 2015 के पश्चात से तीजे पिघल रहा है और जिसके कारण अभी तक वर्फ की चट्टाने जिनकी ऊंचाई औसतन 2500-3000 मीटर तक रही है, अब वह मात्र 1000 मीटर से कही- कही कम हो चुकी है जिसके कारण तथा पहाडियो के नीचे की प्लेटे भी अधिक दवाव बना रही हैं । इसके कारण हिमालय की पहाडिया ऊपर उठ रही हैं जिससे भूकम्प की तीब्रता व आने की संख्या में हर वर्ष बढोत्तरी स्वाभाविक है । यहाँ तक की पहाडिया के पत्थरो के आपस के जुडाव में ढीलापन आ रहा है जिससे थोडी सी तूफानी वारिस हो तोभी बडी-बडी चट्टाने टूट रही है तथा ग्लेसियर की चट्टानो के गिरने की निरंतरता बढती जा रही है । इससे पहाडी इलाको का जन-जीवन केदारनाथ की धटना के पश्चात से दूभर होता जा रहा है । इन कारणॉ का उद्धरण डा. सिह ने अपनी पुस्तक गोलबल-वार्मिंग-2015 में भी कर चुके हैं ।

भारत सरकार को इस पर दूर्गामी नीतिगत योजना बनानी होगी, जिससे आने वाले समय में इन प्रकार के आने वाले प्रत्यासित घटनाओ से बचा जा सके ।